ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, कृषि मौसम विभाग
डा० राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय
पूसा,समस्तीपुर (बिहार)-८४८१२५

बुलेटिन संख्या-६८
दिनांक- शुक्रवार, २५ सितम्बर, २०२०

विगत मौसम पूर्वानुमान अवधि का आकलन

मौसमीय वेद्यशाला पूसा के आकलन के अनुसार पिछले तीन दिनों का औसत अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान क्रमशः २८.६ एवं २५.४ डिग्री सेल्सियस रहा। औसत सापेक्ष आर्द्रता ६३ प्रतिशत सुबह में एवं दोपहर में ६० प्रतिशत, हवा की औसत गति ६.० कि०मी० प्रति घंटा एवं दैनिक वाष्पण ०.७ मि०मी० तथा सूर्य प्रकाश अवधि औसतन ०.०१ घन्टा प्रति दिन रिकार्ड किया गया तथा ५ से०मी० की गहराई पर भूमि का औसत तापमान सुबह में २८.६ एवं दोपहर में ३०.७ डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया। इस अवधि में ११३.४ मि०मी० वर्षा रिकार्ड हुई।

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान
(२६-३० सितम्बर, २०२०)

- ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा०आर०पी०सी०ए०यू०, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी २६-३० सितम्बर तक के मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः-
- पूर्वानुमान की अवधि में उत्तर बिहार के जिलो में हल्के से मध्यम बादल छाये रह सकते हैं। अनुकूल मानसूनी प्रभावों के कारण २४ घंटों तक उत्तर बिहार के अधिकतर स्थानों पर मध्यम बारिश की सम्भावना है। हलांकि कुछ स्थानों पर भारी बारिश भी हो सकती है। उसके बाद वर्षा होने की सम्भावना में कमी आने की अनुमान है।
- इस अवधि में अधिकतम तापमान ३० से ३४ डिग्री सेल्सियस एवं न्यूनतम तापमान २४-२६ डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है।
- अगले एक-दो दिनों तक पछिया हवा तथा उसके बाद के पूर्वानुमानित अवधि में पुरवा हवा चलने का अनुमान है। औसतन ८-१० कि०मी० प्रति घंटा की रफ्तार से हवा चलने की संभावना है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में ७० से ८५ प्रतिशत तथा दोपहर में ६५ से ७५ प्रतिशत रहने की संभावना है।

• समसामयिक सुझाव

- पिछले दिनों हुई वर्षा जल का लाभ उठाते हुए धान की फसल, जो गाभा की अवस्था में आ गयी हों उसमें प्रति हेक्टेयर ३० किलोग्राम नेत्रजन का उपरिवेशन करें। पिछात बोयी गई धान जो कल्ले बनने की अवस्था में हो उसमें प्रति हेक्टेयर ४० किलो नेत्रजन का उपरिवेशन करें। सब्जिओं तथा मक्का के खेतों से जल निकास की उचित व्यवस्था करे।
- इस मौसम में धान की फसल में ब्राउन प्लांट होपर कीट द्वारा नुकसान हो सकता है। यह मच्छरनुमा कीट पौधा की पत्तियों एवं तने से रस चुसता है जिससे पत्तिया सुखी हुई तथा भुरे रंग की हो जाती है। प्रारंभ में यह एक स्थान में रहते है जो बाद में सारे खेत में फैल जाते हैं एवं कभी-कभी यह सारी फसल को नष्ट कर देती है। यदि प्रकोप दिखाई दें तो इमिडाक्लोरोप्रिड / ०.३ मी.ली. प्रति लीटर पानी याद फेनोबुकार्ब ५० ई.सी. /१०० मी.ली. प्रति लीटर पानी की दर से घोल कर आसमान साफ रहने पर छिड़काव करें।
- धान की फसल जो दुग्धाअवस्था में आ गयी हो उसमें गंधी बग कीट की निगरानी करें। इस कीट के शिशु एवं पौढ़ दोनों प्रारंभ में धान की कोमल पत्तियों तथा तनों का रस चूसते हैं जिससे पत्तियॉ पीली होकर कमजोर हो जाती है तथा पौधों की बढ़वार बाधित हो जाती है और वे छोटे रह जाते है। जब पौधों में बाली निकलती है तो यह बालियों का रस चुसना प्रारंभ कर देती हैं जिससे दाने खोखले एवं हल्के हो जाते हैं तथा छिलका का रंग सफेद हो जाता है। धान की दुग्धावस्था में यह पौधों को अधिक क्षति पहुचाती है जिससे उपज में काफी कमी होता है। इसके शरीर से विशेष प्रकार का बदबु निकलती है, जिसकी वजह से इसे खेतों में आसानी से पहचाना जा सकता है। इसकी संख्या जब अधिक हो जाती है तो एक-एक बाल पर कई कीट बैठे मिलते है। इसके नियंत्रण के लिए फॉलीडाल १० प्रतिशत धूल का प्रति हेक्टेयर १०-१५ किलोग्राम की दर से भूरकाव ८ बजे सुबह से पहले अथवा ५ बजे शाम के बाद बालियों पर करें। खतों के आस-पास के मेड़ों पर दवा का भूरकाव आसमान साफ रहने पर हीं करें।
- धनबाल निकलने की अवस्था में जो मक्का की फसल आ गयी हो उसमें ३० किलोग्राम नेत्रजन प्रति हेक्टेयर की दर से उपरिवेशन करें। कीट एवं रोग व्याधि की निगरानी फसल में नियमित रुप से करें।
- मिर्च की फसल में विषाणु रोग से ग्रसित पौधों को उखाड़कर जमीन में गाड़ दे, तदुपरांत इमिडाक्लोप्रिड एक मी०ली० प्रति ३ लीटर पानी की दर घोल बनाकर छिड़काव आसमान साफ रहने पर हीं करें।
- फूलगोभी की पूसा अगहनी,पूसी, पटना मेन, पूसा सिन्थेटिक-१, पूसा शुभ्रा, पूसा शरद, पूसा मेधना, काशी कुवॉरी एवं अर्ली स्नोवॉल आदि किस्मों की रोपाई करे। फूलगोभी की पिछात किस्मो जैसे माघी, स्नोकिंग, पूसा स्नोकिंग-१, पूसा-२, पूसा स्नोवॉल-१६, पूसा स्नोवॉल के-१ की नर्सरी में बुआई के लिए खेत की तैयारी शुरु करें। पत्तागोभी की प्राइड ऑफ इण्डिया, गोल्डेन एकर, पूसा मुक्ता, पुसा अगेती एवं अर्ली ड्रम हेड किस्मों की बुआई नर्सरी में करें।
- सब्जियों की नर्सरी में लाही, सफेद मक्खी व चूसक कीड़ों की निगरानी करें। ये कीट विषाणु जनित रोग के लिए वाहक का काम करते है। इससे बचाव के लिए इमिडाक्लोरोप्रिड दवा का ०.३ मी.ली. प्रति लीटर पानी की दर से घोल कर छिड़काव आसमान साफ रहने पर हीं करें। नर्सरी से खरपतवार समय-समय पर निकालते रहें ताकि स्वस्थ पौध मिल सकें।
- बैगन की फसल में तना एवं फल छेदक कीट की निगरानी करें। शुरुवाती रोक-थाम के लिए बैगन की रोपाई के १०-१५ दिनों बाद १ ग्राम फ्युराडान ३ जी० दानेदार दवा प्रति पौधा की दर से जड़ के पास मिट्टी में मिला दें। खड़ी फसल में इस कीट का आक्रमण होने पर कीट से ग्रसित तना एवं फल की तुराई कर मिट्टी में गाड़ दें। यदि कीट की संख्या अधिक हो तो स्पिनोसेड ४८ ई०सी०/१ मि०ली० प्रति ४ लीटर पानी या क्वीनालफॉस २५ ई०सी० दवा का १.५ मि०मी० प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव आसमान साफ रहने पर हीं करे।

आज का अधिकतम तापमानः २६.२ डिग्री सेल्सियस, सामान्य से ६.४ डिग्री कम	आज का न्यूनतम तापमानः २४.७ डिग्री सेल्सियस, सामान्य से ०.४ डिग्री कम

(डॉ० गुलाब सिंह)
तकनीकी पदाधिकारी

(डॉ० ए. सत्तार)
नोडल पदाधिकारी